International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 4, April - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

भोजपुरी की भाषिक एवं साहित्यक सीमाएँ

डॉ0 वीरेन्द्र सिंह यादव
विभागाध्यक्ष–हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषा विभाग
डॉ0 शकुन्तला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय,लखनऊ,उ.प्र–226017

शोध सारांश–परम्परागत साहित्य में आज भी भोजपुरी साहित्य का अभाव पाया जाता है कारण यही है कि शायद जो स्थान भोजपुरी को मिलना चाहिए वह वर्तमान साहित्य में नहीं मिल पाया है। भाषिक एवं साहित्यक दृष्टि से भोजपुरी की अधिकांश संस्कृति मौखिक ही रही है तथा इसका परिवर्तन एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को होता रहा है। यह लोक परम्पराओं, प्रथाओं, रीतियों, विश्वासों से जुड़ी हुई है तथा मौखिक परम्परा की धरोहर है तथा आधुनिक युग में भी भोजपुरी गीतों में पुरातन रीति–रिवाजों के वर्णन मिलते हैं जो भोजपुरी साहित्य की जीवन्तता को दर्शाते हैं। भोजपुरी की इस विशाल वाचिक साहित्य सम्पदा को कुछ विद्वानों ने अथक परिश्रम से समेटने और संरक्षित कर लेने की कोशिश जरूर की है। लेकिन इसका एक बड़ा हिस्सा आज भी असंकलित तथा अप्रकाशित है। जो पश्चिमी सभ्यता की अंधी दौड़ में निज भाषा की नितान्त उपेक्षा से विस्मृति के गर्त में चला गया है। देखा जाये तो भोजपुरी का यह मौखिक साहित्य इतना विस्तृत और विशाल है कि इसका संग्रह तैयार किया जाये तो आज अनेक ग्रंथ तैयार हो जायें। भोजपुरी साहित्य को आज की महती जरूरत है इसके साथ ही भोजपुरी के समग्र विकास के लिये इसके विभिन्न पहलुओं पर ध्यान देना अत्यन्त आवश्यक है। भाषा, साहित्य, व्याकरण के साथ–साथ संग्रह एवं संरक्षण का कार्य भी अति आवश्यक है।

KEY WORDS- *भोजपुरी, भाषा,साहित्य,लोक परम्पराएँ,प्रथाएँ,रीतियाँ, विश्वास,मौखिक परम्परा,सीमाएँ।*

भाषा न केवल एक सांस्कृतिक धरोहर होती है अपितु वह संस्कृति का निश्चित सुरक्षा कोष भी होती है क्योंकि भाषा में गीतों, रीति–रिवाजों, परम्पराओं, कहावतों, कहानियों, त्योहारों, कलाओं, पहनाओं, खाद्य पदार्थों तथा लोक जीवन जैसे विषयों का समावेश निहित होता है। आज जितनी भी भाषायें जीवित हैं उन सभी में भोजपुरी अत्यन्त उदार भाषा है। इस भाषा में कोमलता के साथ ही इतनी ग्रहणशीलता है कि यह किसी भी भाषा को अपने अनुरूप बनाकर अपनाने के लिये तैयार रहती है। इसका शब्दकोश अत्यन्त समृद्ध है। परन्तु भोजपुरी भाषा की सबसे बड़ी कमी है इसका लिखित स्वरूप का न होना। या कम होना। यहीं से इस भाषा में बदलाव आने लगता है। यदि इस भाषा का स्वरूप लेखन कार्य से जुड़ जाये तो इसके स्थायी विकास में किसी प्रकार की कोई कमी का अनुभव नहीं किया जा सकता। आज समय की आवश्यकता है कि भोजपुरी भाषा को साहित्य के परिप्रेक्ष्य में ध्यान रखकर बढ़ाया जाये ।

भारतीय आर्य भाषाओं की पूर्वी अथवा मगध परिवार की पश्चिमी प्रमुख बोली भोजपुरी पूर्वी अपभ्रंश से प्रमुखतः तथा संस्कृत–प्राकृत और पालि से परिवर्तित हुई है। ब्रिटिश अफसर डॉ. ग्रियर्सन, जिन्होंने

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 4, April - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

भारत का भाषावैज्ञानिक सर्वेक्षण किया, ने भोजपुरी को 'बिहारी हिन्दी' की संज्ञा दी। बिहारी से तात्पर्य है कि जिसमें मगही, मैथिली, अवधी और भोजपुरी समाविष्ट हैं।भोजपुरी को आम तौर पर बोली, जनपदीय भाषा या लोक भाषा कहा जाता है। विद्वानों के अनुसार भोजपुरी एक समर्थ और जीवन्त भाषा है। भोजपुरी भाषा की विशेषता उसकी कोमलता और विशाल जनजीवन में समायी हुई लोक संस्कृति की अस्मिता है। भोजपुरी के अपने ही कई बोली रूप हैं। चार की चर्चा तो ग्रियर्सन ने ही की है – उत्तरी, दक्षिणी, पश्चिमी और नगपुरिया। साथ ही भोजपुरी को ग्रियर्सन ने 'बिहारी' बोली वर्ग में मैथिली और मगही के साथ रखा है। अपनी पुस्तक 'भारत का भाषा वैज्ञानिक सर्वेक्षण' खण्ड 5, भाग 2 में डॉ. ग्रियर्सन लिखते हैं – भोजपुरी उस शक्तिशाली, स्फूर्ति पूर्ण उस सक्रिय जाति की व्यवहारिक भाषा है जो हमेशा अपने को परिस्थितियों के अनुकूल ढालने के लिए तत्पर रहती है, जिसने समस्त भारत पर अपना प्रभाव छोड़ रखा है। परन्तु अन्य विद्वानों जैसे उदय नारायण तिवारी, श्री जयकान्त मिश्र, भोलानाथ तिवारी, डॉ. सुनीति चटर्जी, रास बिहारी पाण्डेय इत्यादि ने भोजपुरी भाषा व बोली के सन्दर्भ में अपने अलग–अलग तर्कसंगत मत प्रस्तुत किये हैं।

डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय की पुस्तक 'भोजपुरी साहित्य का इतिहास' के अनुसार चौदह ऐसे जिले हैं जहाँ भोजपुरी बोली जाती है। भोजपुरी उत्तर प्रदेश और बिहार के कई जिलों की एक प्रभावशाली भाषा है। उत्तर प्रदेश के निम्न जिलों में यह प्रचलित है – बलिया, गाजीपुर, बनारस, मिर्जापुर, सोनभद्र, जौनपुर, आजमगढ़, गोरखपुर, देवरिया, बस्ती, मऊ और सिद्धार्थनगर। बिहार में यह निम्नलिखित क्षेत्रों तक फैली है – सारण, सिवान, महाराजगंज, भोजपुर, रोहतास, पूर्वी चंपारन, पश्चिमी चंपारन (निलहे गोरों के अत्याचारों के विरूद्ध गांधी जी के बहिष्कार आंदोलन का क्षेत्र), छपरा, पलामू, राँची (छोटा नागपुर क्षेत्र), गोपालगंज और भभुआ (आरा)। मध्य प्रदेश के पुराने (भूतपूर्व) जसपुर तथा बिलासपुर जिले में भी भोजपुरी का खूब प्रयोग होता है। इस क्षेत्र में तथा मुजफ्फरनगर और उनके आस–पास भी लोग भोजपुरी मिश्रित बोली बोलते हैं।

प्रो. मनोरंजन प्रसाद सिन्हा रचित इस लोरी से यह और भी स्पष्ट हो जाता है –

आरे आवऽ
छपरा आवऽ
बलिया–मोतिहारी आवऽ
गोरखपुर–देवरिया आवऽ
बस्ती अउर जौनपुर आवऽ
मिर्जापुर–बनारस आवऽ
सोने के कटोरिया में
दूध–भात ले ले आवऽ
बबुआ के मुँहवा में घुटूक।

अर्थात् आरा, छपरा, बलिया, मोतिहारी, गोरखपुर, देवरिया, गाजीपुर, आजमगढ़, बस्ती, जौनपुर, मिर्जापुर और बनारस आइए, सोने की कटोरी में दूध–भात लाइए तथा उसे मुन्ने के मुँह में डालिए।

यह भोजपुरी क्षेत्र में एक प्रसिद्ध शिशु–गान है, जिसे भोजपुरी माताएँ अपने बच्चों को खिलाते समय गाती हैं। प्रसिद्ध गायिका लता मंगेशकर ने भी इस गीत को इस प्रकार स्वर दिया है –

रे चाँदा मामा!

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 4, April - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

आरे आव, आरे आवऽ
नदिया किनारे आवऽ
सोने के कटोरिया में
दूध–भात ले ले आवऽ
बबुआ के मुँहवा में घुटूक।

अर्थात् ओ चंदा मामा! (माँ का भाई) नदी के इस पार या उस पार तथा नदी के किनारे आओ। अपने साथ सोने की कटोरी में खीर लाओ और मुन्ने के मुँह में डालो। बिहारियों की एक प्रमुख बोली होने के कारण भोजपुरी का विभाजन करना आवश्यक है, क्योंकि इस भाषा को लेकर बहुत भ्रांतियाँ हैं। वास्तव में मॉरीशस वासियों की यह गलत धारणा है कि जिस प्रकार 'क्रिओल' की व्युत्पत्ति फ्रेंच से हुई उसी प्रकार भोजपुरी भी हिन्दी से व्युत्पन्न है, और इसे हिन्दी का अपभ्रंश रूप माना जाता है। जो सच्चाई से कोसों दूर है।

भोजपुरी भाषा नामकरण के सन्दर्भ में इसका इतिहास बड़ा रोचक होने के साथ–साथ अनेक मत मतान्तर हैं। पटना के गजेटियर्स रिविजन स्कीम के विशेष अफसर पी. सी. राय चौधरी के अनुसार भोजपुरिया शब्द का भाषा के रूप में सर्वप्रथम उल्लेख सन् 1789 ई0 में हुआ। स्थान वाचक भोजपुर की भाषा के रूप में भोजपुरी नाम तो स्पष्ट है ही जो बिहार के बक्सर से निकट शाहाबाद के समीप 'भोजपुर' परगने के रूप में जाना जाता है। आज भोजपुर एक जिला है तथा 'पुरनका' व 'नयका' भोजपुर आज भी स्थित है। कुछ विद्वान भोजपुर का सम्बन्ध मालवा के राजा भोजदेव से कुछ गुर्जर प्रतिहार मिहिर भोज से, कुछ शिशुपाल, रूक्मी और जरासंध की बसाई 'भोजकट नगरी' जो कालान्तर में 'भोजपुर' कहलाई, उससे जोड़ते हैं। आज भोजपुरी का विस्तार जितना बिहार में है उससे कहीं ज्यादा बिहार के बाहर है। बिहार, उत्तर प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखण्ड, मध्य प्रदेश समस्त महानगरों के अलावा भारत के बाहर नेपाल, मॉरीशस, फ़िजी, ट्रिनीनाद, गुयाना, सूरीनाम, वर्मा इत्यादि देशों तक इस भाषा व बोली का प्रचार–प्रसार है। भोजपुरी भाषा की पृष्ठभूमि के बारे में केवल मॉरीशस की बात करें तो साढ़े चार लाख गिरिमिटिया मजदूर अप्रावासी–गिरिमिटिया पहले अल्प संख्या में मॉरीशस में आये। यह सिलसिला (1834–1924) तक चला। हिन्दी भाषा के बाद भोजपुरी भारत में सबसे ज्यादा (दो करोड़ से अधिक) बोली जाने वाली भाषा है। हिन्दी क्षेत्र, देश, जाति में इस भाषा की अवधारणा के विकास को महसूस किया जा सकता है।

साहित्य के परिप्रेक्ष्य में यदि हम बात करें तो अभी भोजपुरी में साहित्य का अभाव है इसलिए जो स्थान भोजपुरी को मिलना चाहिए वह नहीं मिल पाया है। भोजपुरी की अधिकांश संस्कृति मौखिक ही रही है तथा उनका हस्तांतरण एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को होता रहा है। क्योंकि यह लोक परम्पराओं, प्रथाओं, रीतियों, विश्वासों से जुड़ी हुयी है तथा मौखिक परम्परा की धरोहर है तथा आधुनिक युग में भी भोजपुरी गीतों में पुरातन रीति–रिवाजों के वर्णन मिलते हैं जो भोजपुरी साहित्य की जीवन्तता को दर्शाते हैं। गाँवों में रोपनी–सोहनी करती हुई स्त्रियों के कंठ में बिरहा व आल्हा गाते अहीरों के कंठों में तथा सारंगी बजाकर अपने उदरपूर्ति में संलग्न, भिक्षाटन करने वाले जोगियों, सन्यासियों के सरस सुन्दर स्वरों में भोजपुरी साहित्य छिपा हुआ है। परम्परा–वाहक महिलाओं की अनेक पीढ़ियों ने अपनी स्मृति तथा कंठ में इन पुरातन परम्पराओं को सजीव (जीवित) रखा है जो जीवन–जगत के अनेक रहस्य एवं गंभीर भावों को अपने में समेटे हुये हैं। जो वेदों एवं पुराणों को भी मात देते नजर आते हैं। भोजपुरी की इस विशाल वाचिक साहित्य सम्पदा को कुछ विद्वानों ने अथक परिश्रम से समेटने

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 4, April - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

और संरक्षित कर लेने की कोशिश जरूर की है। लेकिन इसका एक बड़ा हिस्सा आज भी असंकलित तथा अप्रकाशित है। जो पश्चिमी सभ्यता की अंधी दौड़ में निज भाषा की नितान्त उपेक्षा से विस्मृति के गर्त में चला गया है। देखा जाये तो भोजपुरी का यह मौखिक साहित्य इतना विस्तृत और विशाल है कि इसका संग्रह तैयार किया जाये तो आज अनेक ग्रंथ तैयार हो जायें। वर्तमान की आवश्यकता है कि आज भोजपुरी के समग्र विकास के लिये इसके विभिन्न पहलुओं पर ध्यान देना अत्यन्त आवश्यक है।और भाषा, साहित्य, व्याकरण के साथ–साथ संग्रह एवं संरक्षण का कार्य भी अति आवश्यक है।

हिन्दी साहित्य की तरह भोजपुरी साहित्य में भी गद्य विधा एक ऐसी पद्धति है जिसके माध्यम से किसी भी क्षेत्र की पृष्ठभूमि तैयार करने में सहायता मिलती है। क्योंकि इस विधा से जहाँ हम उस क्षेत्र के विचारों, भावनाओं और उनकी लोक कथाओं का समावेश करेंगे, दूसरी ओर जनमानस तक एक परम्परा की छाप छोड़ने में सफल सिद्ध होंगे। इस विधा के माध्यम से सांस्कृतिक परिवेश को स्थायित्व प्रदान करने में बहुत सहयोग मिलेगा। सामाजिक एकता, समरसता इससे अधिक बलवती व मुखर होगी तथा राष्ट्र की एकता व अखण्डता को भी बल मिलेगा। क्योंकि भारत की अधिकतम आबादी गाँवों में निवास करती है जिसे अपनी संस्कृति से विशेष लगाव होता है। अपनी धरती को साहित्य के धरोहर के रूप में देखकर जनमानस उसे बचाये रखने का पुरजोर प्रयास करता है।

सिनेमा, नाटक, नौटंकी, समाचार पत्र, पत्रिकाओं, कवि गोष्ठी इत्यादि इसे आगे ले जाने में अवश्य सहायक होंगे तथा इन कार्यों को पूरा करने में जन–जन के सहयोग की आवश्यकता है तभी यह भाषा अपनी पुरानी परम्परा को नये युग में जीवित रखने में सक्षम होगी। यह सत्य है कि यह निपढ़ एवं असभ्य लोगों की पूंजी है परन्तु जीवन की सच्ची तस्वीर भी है तथा संस्कृति की परम्परागत राह से भटके लोगों को पुनः सावधान करके अपनी राह पर चलाने वाली प्रहरी भी है।

भोजपुरी भाषा में जीवन का सुख–दुःख, हर्ष–विषाद, आशा–निराशा, लाभ–हानि सभी का समावेश है परन्तु जाति–पॉति का भेदभाव नहीं है, धार्मिक झगड़े नहीं हैं, आदमी को आदमी से बैर नहीं है, खून–खराबा नहीं है, आतंकवाद नहीं है। यह हर धर्म, जाति, वर्ग की है। इनमें सच्ची एकता, राष्ट्रीयता है, विश्व–बन्धुत्व की भावना है जो लोगों को जोड़ने का मंत्र देती है, तोड़ने का नहीं।

भोजपुरी के शेक्सपियर कहे जाने वाले भिखारी ठाकुर के अतिरिक्त अनेक विद्वान हैं जो भोजपुरी के विकास में जीवन भर प्रत्यनशील रहे एवं आज भी सतत् प्रयास जारी हैं। संत कबीर, भिखारी ठाकुर, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, राहुल सांस्कृत्यायन, आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, डॉ. भगवत शरण उपाध्याय, गणेश चौबे, श्री मोती बी. ए., डॉ. विवेकी राय, मुक्तेश्वर बिहारी उर्फ 'चतुरी चाचा' इत्यादि का नाम सर्वोपरि है।

आज भोजपुरी के बढ़ते हुये महत्व को देखते हुए अनेक शोधार्थियों ने अपना ध्यान इस ओर खींचा है। आज इस क्षेत्र में अनेक शोध कार्य हो रहे हैं। विभिन्न अनछुए महत्वपूर्ण पहलुओं को तार्किक दृष्टिकोण से देखने का प्रयास किया जा रहा है। फिर भी अनेक क्षेत्रों में सुनियोजित कार्यों की आवश्यकता है। देखा जाये तो इस क्षेत्र में शोध कार्य करने वालों के मार्ग में अनेक कठिनाइयां आती हैं। गाँव–गाँव जाकर लोगों से उनके संस्कार गीत, श्रमगीत जाति गीत, पारम्परिक गीतों को जानना और फिर उसे समझना–परखना आसान कार्य नहीं है। गाँवों से हमारा तात्पर्य यही है कि भारत गाँवों का देश है और यदि हम अपनी सच्ची तस्वीर देखना चाहते हैं तो हमें गाँवों की ओर रूख करना पड़ेगा। उस सभ्यता–संस्कृति को समझना होगा। इस तरह से स्वयं को स्वयं के लिये खोजना होगा। हमारे देश में इसके प्रति उदासीनता ही रही है। लोकगीतों का संग्रह, उनकी सामाजिक सांस्कृतिक

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 4, April - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

व्याख्या, स्वरलिपियों को बनाना, सुरक्षित, संरक्षित रखना इत्यादि। अर्थात् लोकगीतों के सन्दर्भ में उसके समस्त क्षेत्रों की व्याख्या करना, उसे समझना और वर्तमान जरूरतों को समझते हुये उन्हें समाज के विकास में प्रयुक्त करना अत्यन्त आवश्यक है। अच्छी बात यह है कि धीरे–धीरे लोगों की समझ में आने लगी है कि जिन्हें भोजपुरी के उत्थान में हिन्दी का अहित नजर आता था उन्हें भी लगने लगा कि भोजपुरी के विकास न होने से हिन्दी और भारतीय समाज दोनों का ही अहित है। जो बुद्धिजीवी वर्ग एवं तथाकथित सुसभ्य, सुसंस्कृत कहे जाने वालों को यह भाषा 'गँवारूपन' अथवा 'देहाती' प्रतीत होती थी आज वे भी अपनी सहभागिता इसमें चाहते हैं। भोजपुरी के विशेष सम्मेलनों, कार्यक्रमों में भाषाहीनता एवं काम चलाउपन की जो प्रवृत्ति समाज में घर कर रही थी, शनैः शनैः उसमें व्यापक परिवर्तन नजर आने लगा है। अनेक लेखकों ने भोजपुरी कविता कहानी, उपन्यास, नाटक, निबन्ध इत्यादि प्रत्येक क्षेत्र में रचनाकारों ने अपनी लेखनी चलाई है।

एक नजर यदि हम भोजपुरी काव्य यात्रा पर डालें तो यह कबीर आदि संत कवियों से लेकर आज तक चलता आ रहा है। धरनीदास, कीनाराम, पलटूराम, भीखमराम, लक्ष्मीसखी, भीखा साहब, बूला साहब, गुलाल, बीरू शाह इत्यादि की रचनायें भोजपुरी साहित्य की धरोहर हैं। काव्य भाषा के रूप में भोजपुरी इन संतों की वाणी बन गई। 'फजीर' (सुबह) जैसे भोजपुरी शब्द अरबी (फजुर) से उत्पन्न हैं। मीरा और अन्य भक्त–सन्तों ने अपने काव्यों में भोजपुरी का विपुल मात्रा में प्रयोग किया है। इसी तरह गोरखनाथ जैसे नाथसंतों तथा रसिकायन एवं आल्हा–ऊदल के गायकों ने भोजपुरी का खूब प्रयोग किया। बाद में बेचू, खलील, महादेव, जगन्नाथ, लालमणि इत्यादि के पूरबी, भैरो, मोती, रसीले, मानिक लाल, भगेलू आदि की कजली, मदनमोहन, बीसू बिहारी आदि के बिरहे, बिसेसरदास, कैद इत्यादि के झूमर तथा फाग, चईती, सोहर इत्यादि विधाओं की भरमार रही है। भिखारी ठाकुर ,महेन्द्र मिसिर के श्रृंगारपरक गीतों, रघुवीर नारायण की बटोहिया, मनोरंजन प्रसाद की फिरंगिया जो बटोहिया के तर्ज पर ही लिखी गई तथा हीरा डोम की 'अछूत की शिकायत' दलित चेतना व जागरूकता के कारण भारतीय समाज और देश के बाहर भी अत्यन्त लोकप्रिय रहा एवं सराहा गया।

इनके अतिरिक्त 'रूक जा बदरा' मधुकर सिंह की, 'सीता–स्वयंवर', 'रामवृक्षराय', सत्य–हरिश्चन्द्र', सर्वेन्द्र त्रिपाठी की ,'सुदामा यात्रा' दूधनाथ शर्मा की, 'लवकुश', तारकेश्वर मिश्र की 'सीता के लाल' कुंजबिहारी कुंज की रचनायें प्रबन्ध काव्य के अन्तर्गत आती हैं जिन्होंने भोजपुरी काव्य साहित्य को समृद्ध करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

भोजपुरी निबन्ध साहित्य को भी अनेक निबन्ध साहित्यकारों ने अपनी रचना से समृद्ध किया है। पं. विद्यानिवास मिश्र, आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, विवेकी राय, कुबेरनाथ राय तथा कृष्ण बिहारी सरीखे विद्वानों ने इस विधा को आगे बढ़ाने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

डॉ. विवेकी राय की 'के कहल चुनरी रंगा ल' ललित निबन्धों की पहली पुस्तक मानी जाती है। शालिग्राम उपाध्याय तथा जितराम पाठक ने सन् 1977 में 'ललित निबन्धावली' सम्पादित की जो उल्लेखनीय है। डॉ. विवेकी राय तथा सिपाही सिंह द्वारा सम्पादित 'भोजपुरी निबन्ध निकुंज' (1977) में तेरह प्रकार के तैंतालीस निबन्ध संकलित हैं। अन्य निबन्ध संग्रहों में 'कलमिया नाही बस में'' सत्यवादी छपरहिया, भोजपुरी निबन्ध, अक्षयवर दीक्षित, 'जीअल सीखी', प्रफुल्ल चन्द्र ओझा, 'घर के गुर', अविनाश चन्द्र विद्यार्थी, भोजपुरी निबन्ध–चिन्तामणि, डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय की प्रमुख है।

भोजपुरी कहानियों की अपनी एक पहचान है। भोजपुरी साहित्य को समृद्ध एवं सम्पन्न करने में 'कहानी' विधा का महत्वपूर्ण योगदान है। 'भोजपुरी कहानी संग्रह' (प्रो. चन्द्रभूषण शर्मा) ,'भैरवी क साज',

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 4, April - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

(रामबली पाण्डेय), 'भोजपुरी कहानी सोपान' (रामनाथ पाण्डेय), 'खैरा पीपर कबहू न डोले' (रामवृक्ष राय), 'बटोही' (राय सच्चिदानन्द), 'बैरिन बंसुरिया' (गिरिजा शंकर राय) चुटकी भर सेनुर (कामता प्रसाद ओझा), प्रेमकथा (राधा मोहन राधेश) ,बिछउतिया (तैयब हुसैन पीड़ित), 'भंइसी क दूध' (डॉ. मुक्तेश्वर बिहारी) ,तिनपतिया (डॉ. स्वर्ण किरण), ओझइति (डॉ. विवेकी राय) इत्यादि कहानी संग्रह विशेष उल्लेखनीय हैं।

इनके अतिरिक्त भोजपुरी कहानियों से भोजपुरी साहित्य सदैव समृद्ध रहा। भोजपुरी जीवन की जटिल संरचना और संस्कृति तथा सदियों से चली आ रही उसकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि अनेकानेक रीतियां, उत्सव एवं प्रथाएं प्रस्तुत करती हैं। निःसंदेह भोजपुरी का अपना एक समृद्ध परम्परागत लोक साहित्य तथा लोकगीतों का बहुमूल्य खजाना है। भोजपुरी लोकगीतों की विशिष्टता, उसकी शैली तथा लय में भिन्नता पायी जाती है। ये विभिन्नताएँ लोगों की संस्कृति को उजागर करती हुई लोकगीतों को और भी माधुर्य बनाती है। भोजपुरी भाषा के इन गीतों में आनन्द की मन्दाकिनी की तरंगे तरंगायित हैं। एक समय ऐसा भी था जब भोजपुरी गीतों को गँवार समझा जाता था परन्तु आज इनका एक जीवंत एवं सांस्कृतिक अस्तित्व है। भोजपुरी क्षेत्र से सम्बन्धित लगभग हर एक गांव में परम्परागत महिला गायिकाओं का कम से कम एक दल अवश्य है जो उत्सव पर्वों विशेषकर शादी के शुभावसर पर गाती हैं। भोजपुरी लोकगीतों के दो प्रकार हैं प्रथम संस्कार सम्बन्धी गीत तथा द्वितीय ऋतु सम्बन्धी गीत। हल्दी, कन्यादान, मटकारे, लखा, तिलक, सिंदूरदान, कोहबर, विदाई आदि प्रत्येक रीति तथा अवसर के लिए विभिन्न प्रकार के गीत गाये जाते हैं। स्वभाव में अत्यधिक सांकेतिक भोजपुरी विवाह–गीतों में जीवन–जगत के अनेक यथार्थ संकेतों का अर्थ निहित होता है। जो मानव मन को अतीत के सौन्दर्य में एक बार पुनः लौट जाने को विवश करता है। भोजपुरी लोकगीतों के निम्नलिखित प्रमुख प्रकार हैं – सोहर, खेल बना, जनेऊ के गीत, विवाह के गीत, वैवाहिक परिहास के गीत, गवना के गीत, छठी माता के गीत, शीतला माता के गीत, बहुरा, गोधन, पिड़िया, वारह मासा, चैता, कजली, फगुआ, नागपंचमी, जंतसार, विरहा, झूमर, सोहनी के गीत, भजन, अलचरी, पूर्वी, निर्गुन, पराती, पालने के गीत, खेल गीत, जानवरों के गीत आदि। वर्तमान समय के तकनीकी युग में आधुनिक 'भाष्यकारों ने परम्परा से अधिक मात्रा में गृहीत कर तथा पुराने लोकगीतों का आधुनिक इलेक्ट्रॉनिक संगीतात्मक प्रणालियों पर पुनः सृजन कर परम्परा तथा आधुनिकता का एक सुन्दर सम्मिश्रण प्रस्तुत किया है।

भोजपुरी कहानियों में जनमानस की पीड़ा की अभिव्यक्ति खुले रूप में व्यक्त की गयी है। इन कहानी संग्रहों के अतिरिक्त अन्य लघुकथायें भी विभिन्न पत्रिकाओं के माध्यम से प्रकाशित होती रही हैं और वर्तमान में इसका तीव्र गति से प्रचार–प्रसार हो रहा है। भोजपुरी कहानी की कथा मूल और मुख्य रूप से गाँव से जुड़ी है। गाँवों में रहने वालों की सभ्यता–संस्कृति, रीति–रिवाज, खान–पान इत्यादि के साथ जीवन जीने की शैली का पूर्ण चित्रण इनमें प्रतिबिम्बित है।

यह बात सत्य है कि जितना कार्य, जितना विकास हिन्दी साहित्य में हुआ, उतना भोजपुरी में उतनी मात्रा में नहीं हुआ, और हुआ भी तो प्रकाशित नहीं हुआ। डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय भोजपुरी भाषा के विकास में अवरोधक तत्वों पर प्रकाश डालते हुए लिखते हैं कि ''इतना होने पर भी यह कम दुःख की बात नहीं है कि इसका साहित्य अभी तक समृद्ध रूप में नहीं दीख पड़ता। वह अभी तक लिखित अवस्था में भी नहीं है बल्कि जीविका के लिए इधर–उधर भ्रमण करने वाले गायकों और अनपढ़ देहातियों की जिह्वा पर निवास कर रहा है। भोजपुरी साहित्य की अभिवृद्धि न होने का प्रधान कारण है राजाश्रय का अभाव। भोजपुर मण्डल में किसी प्रभावशाली, व्यापक प्रतापी नरेश का पता नहीं चलता।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 4, April - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

अधिकतर इसमें किसानों की बस्तियाँ हैं। किसी गुणग्राही नरपति के आश्रय न मिलने से साहित्य सम्पन्न न हो सका। भोजपुरी को तो न विद्यापति ही मिले, न सूर ही। मैथिली और ब्रज के समान इसकी वृद्धि हो तो कैसे हो ? विद्यापति के कारण मैथिली साहित्य का उदय हुआ और सूरदास के कारण बृजभारती चमक पड़ी, और ये दोनों रसिक काव्य की भाषा समझी जाने लगी; किन्तु उत्साह तथा प्रतिभा के अभाव में भोजपुरी साहित्य पनप न सका। यदि प्रतिभा सम्पन्न कवि इसमें मिल गये होते, तो स्वभावतः सरस तथा मधुर होने के हेतु इसका भी साहित्य, रसिकों के गले का हार बन गया होता।''इस सब के बावजूद आज सरकारी व गैर सरकारी संगठन भोजपुरी, भाषा व बोली एवं इसकी दिशा को सहेजने संवारने में लगे हैं, अनेक कवि रचनाकारों की रूचि भोजपुरी साहित्य को समृद्ध करने में हो रही है इधर पिछले दिनों देश की राजधानी दिल्ली में महत्वपूर्ण भोजपुरी संगठनों ने मिलकर भोजपुरी भाषा को मान्यता दिलाने के लिये सक्रिय आन्दोलन किया और इसके लिए बाकायदा एक्शन प्लान बनाने की घोषणा के पीछे भोजपुरी भाषा के प्रति हार्दिक लगाव का प्रतीक है। वैश्विक परिदृश्य की बात करें तो मॉरीशस आदि देशों में यह भाषा भारतीय अप्रवासियों की आत्मा में आज भी जीवंत है। भोजपुरी के हर क्षेत्र में बढ़ते स्वर्णिम कदम साहित्य कला (विशेषकर सिनेमा जगत) संस्कृति को देखते हुए ऐसा लगता है अब भोजपुरी की उपेक्षा बहुत अधिक समय तक नहीं की जा सकती है। भोजपुरी को भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में जोड़ने की माँग भी तेजी से उठ रही है। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय एवं डॉ0 शकुन्तला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय,लखनऊ,उ.प्र में भोजपुरी अध्ययन एवं अनुसंधान केंन्द्र द्वारा इसके संरक्षण एवं संवर्द्धन हेतु उचित कार्य किए जा रहे हैं। जिससे निश्चित ही भोजपुरी का भविष्य स्वर्णिम होगा।

संदर्भ ग्रन्थ–

- डॉ0 कृष्णदेव उपाध्याय–लोक साहित्य की भूमिका–साहित्य भवन, इलाहाबाद, संस्करण – 2002
- डॉ0 कृष्णदेव उपाध्याय–भोजपुरी और उसका साहित्य–राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
- कृष्णदेव उपाध्याय–भोजपुरी ग्रामगीत भाग–1– हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग
- कृष्णदेव उपाध्याय–भोजपुरी ग्रामगीत भाग–2– हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग
- श्री दुर्गाशंकरप्रसाद सिंह,भोजपुरी लोकगीतों में करूण रस– हिन्दी साहित्य सम्मेलन,प्रयाग
- रामएकबाल सिंह,'राकेश'–मैथिली लोकगीत– हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग,2010
- डॉ0 गंगानाथ झा–भोजपुरी गीतों में राष्ट्रीय भावना, प्र0सं0 अजन्ता प्रेस, पटना
- रामनरेश त्रिपाठी–पथिक, प्र0सं0, पंकज प्रकाशन, पटना
- डॉ॰विजयकुमार,विजय,भोजपुरी भाषा, साहित्य और संस्कृति, प्रकाशन मंदिर, वाराणसी, संस्करण–2004–05
- हिन्दुस्तान एकेडमी, हिन्दी भाषा का इतिहास, प्रयाग, संस्करण, 1973
- डॉ॰ कृष्णदेव उपाध्याय,भोजपुरी लोक साहित्य, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, संस्करण–2002
- जयप्रकाश राय–डॉ॰ योगेन्द्र प्रताप सिंह, उत्तर मध्य क्षेत्र की संस्कृति–प्रकाशन विभाग, भारत सरकार, संस्करण–1999
- राम नाथ सुमन–सम्मेलन पत्रिका (लोक संस्कृति विशेषांक)
- डॉ0 धीरेन्द्र वर्मा प्रधान सम्पादक–हिन्दी साहित्य कोष (भाग–1)
- डॉ0 लक्ष्मी कान्त पाण्डेय–भाषा विज्ञान तथा हिन्दी भाषा का विकास–ग्रन्थम–रामबाग, कानपुर

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 4, April - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A